मधुबन ओम् शान्ति अंक 267 अक्टूबर 2014

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(12-09-14)

प्राणेश्वर प्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, अपनी सूक्ष्म सकाश द्वारा विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित, सदा समर्थ बन वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने वाले निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी लक्की लवली बेहद सेवाधारी भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - साक्षी दृष्टा बन ड्रामा की हर सीन देखते, सच्चाई और प्रेम से पार्ट बजाते हर एक अपना श्रेष्ठ भाग्य बना रहे हो। मीठे बाबा ने हर परिस्थिति में सदा अचल अडोल एकरस रहना सिखाया है। यह अन्तिम शरीर भी कुछ समय से अपना खेल दिखाता रहता है। बाबा कहते बच्चे इसमें भी सेवा समाई हुई है। बहुत सी आत्मायें समीप सम्बन्ध में आ जाती हैं। अभी मैं मुम्बई से वापस शान्तिवन में आ गई हूँ। हमारी दादी गुल्जार ने बहुत प्यार से साथ निभाते बाबा की शक्तिशाली दृष्टि देते मुझे ऐसी एनर्जी दी जो मैं मधुबन पहुंच गई। आप सबकी यादें, ईमेल, फोन आदि मिलते रहते हैं। पूरे ब्राह्मण परिवार का स्नेह पहुंचता रहता है। ड्रामा में बाबा को जो सेवा करानी है, वह करा रहा है। बाबा कहते बच्चे सदा केयरफुल रहना है और बाबा ने जो दिया है वह शेयर करना है। संगम का यह अमूल्य समय, संकल्प, श्वांस, सम्पत्ति सब कुछ सफल करने का भाग्य है। बाबा की सेवा में जो कोई कुछ भी करता है अपना भाग्य बनाता है। अगर कोई झूठ बोलता, गलती करता तो बाबा कहते बच्चे तुम नहीं करो। कोई करता है तो उसे तुम देखो भी नहीं। सदा अपने ऊपर ध्यान रखो, अपने चिंतन को श्रेष्ठ बनाओ। समय प्रमाण ज्ञान और योग से चारों ही सबजेक्ट में अब फुल मार्क्स लेनी हैं। भगवान पढ़ा रहा है, मैं पढ़ने वाली आत्मा हूँ, यह पढ़ाई विश्व की बादशाही देती है। ड्रामा में अन्तिम जन्म की यह अन्तिम घड़ियां भी अनेक प्रकार से अनेकों को प्रेरणा देने के निमित्त बनी हुई हैं। मैं तो हमेशा कहती हूँ बाबा यह तन तेरा है, जैसे भी चलाना है चलाये, मैं विदेही बनकर रहूं। मन में भी एक बाबा के सिवाए दूसरा कोई याद न आये। समर्थ संकल्पों का स्टॉक इतना जमा हो जो व्यर्थ संकल्प समीप भी न आ सकें। धन भी जो बाबा ने दिया है वह सब सफल हो जाए। सम्बन्ध भी सबसे अच्छे से अच्छे हों। कोई संबंध मुझे अपने बंधन में बांध न ले। स्मृति में बीती कोई बातें समाई हुई न हों। कल तक जो बीता वह बीत गया। बाबा कहता है बच्ची बीती को चितओ नहीं, न मुझे कोई चिंता है, न कोई चिंतन।

मेरी तो पूरे ब्राह्मण परिवार प्रति यही शुभ भावना है कि मीठे बाबा ने जो इतना ज्ञान दिया है वह हर एक की जीवन से दिखाई दे। मधुबन, मुरली और बाबा... इसके सिवाए बुद्धि में और कुछ है ही नहीं। बोलो, ऐसा ही अनुभव करते हो ना! बाबा की एक एक मुरली ध्यान से पढ़ो तो लगता है बाबा कैसे ज्ञान के गुह्य राज़ सरल शब्दों में सुनाकर सम्पन्न बना रहा है। अब यह सम्पन्न बनने की घड़ियां हैं।

बाकी मधुबन में तो सेवाओं की सदा बहार है। डाक्टर्स की कान्फ्रेन्स पूरी हुई। अब शान्तिवन में स्पार्क और कल्चरल की कान्फ्रेन्स चल रही है, मधुबन के तीनों स्थानों पर भिन्न-भिन्न सेवायें सदा चलती रहती हैं। करनकरावनहार बाबा अपने बच्चों को निमित्त बनाए अनेक प्रकार की बेहद सेवायें कराता रहता है। आप सब भी याद और सेवा का बैलेन्स रखते सदा खुशमौज में होंगे। सभी भाई बहिनों को खास हमारी स्नेह भरी याद देना जी।

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

निर्भयता का गुण धारण कर आसुरी संस्कारों का संहार करो

1) शक्तियों का मुख्य गुण ही है निर्भय, भय बहुत बड़ा विकार है इसलिए भय को छोड़ना है। निर्भयता तब आयेगी जब निराकारी अवस्था में रहने का अभ्यास करेंगे। भय शरीर के भान में आने से होता है।

2) अभी तक जगत-माता बहुत बने, अब शक्तिरूप से स्टेज पर आना है। शक्तियां आसुरी संस्कारों को एक धक-से खत्म करती हैं और स्नेही मां जो होती है वह धीरे-धीरे प्यार से पालना करती है। पहले वह आवश्यकता थी लेकिन अभी आवश्यकता है शक्ति रूप बन आसुरी संस्कारों को एक धक से खत्म करने की।

3) शक्तियां अब संहारकारी बनो और जल्दी-जल्दी अपने और अन्य के आसुरी संस्कारों का संहार करो। शृंगार तो बहुत किया लेकिन अब संहार करो। मास्टर ब्रह्मा भी बने, पालना भी की, शृंगार किया लेकिन अब पार्ट है संहार का। शक्तियों के अलंकार और शक्तियों की ललकार के साथ घुँघरु की झंकार का भी गायन है। घुँघरु डालकर असुरों पर नाचना है। नाचने से जो भी चीज़ होगी वह दबकर खत्म हो जायेगी। विनाश के समय निर्भय रहने की निशानी यह घुँघरु की झंकार है।

4) भय का भी भूत कहा जाता है। आप उस भूत से छूट गये हो ना। कोई भय है? जहाँ मेरापन होगा वहाँ भय जरुर होगा। मेरा बाबा। सिर्फ एक ही शिवबाबा है जो निर्भय बनाता है। उनके सिवाए कोई भी सोना हिरण भी अगर मेरा है तो भी भय है। तो चेक करो मेरे मेरे का संस्कार किसी भी सूक्ष्म रुप में रह तो नहीं गया है?

5) सत्यता के शक्ति की निशानी है ''निर्भयता''। कहा जाता है 'सच तो बिठो नच' अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा बेफिकर निश्चिन्त होने के कारण, निर्भय होने के कारण खुशी में नाचता रहेगा। जहाँ भय है, चिंता है वहाँ खुशी में नाच नहीं सकते। अपनी कमजोरियों की भी चिंता होती है। अपने संस्कार वा संकल्प कमजोर हैं तो सत्य मार्ग होने के कारण मन में अपनी कमजोरी का चिंतन चलता जरूर है। कमजोरी मन की स्थिति को हलचल में लाती है।

6) आप सब बच्चे निर्भय हो, क्योंकि आप सदा निर्वैर हो। आपका किसी से भी वैर नहीं है। सभी आत्माओं के प्रति भाई-भाई की शुभ भावना, शुभ कामना है। ऐसी शुभ भावना, कामना वाली आत्मायें सदा निर्भय रहती हैं। जो स्वयं योगयुक्त स्थिति में स्थित हैं वो कैसी भी परिस्थिति में सेफ जरूर हैं।

7) जो बाप की छत्रछाया में रहते हैं वो सदा सेफ हैं। छत्रछाया से बाहर निकले तो फिर भय है। छत्रछाया के अन्दर निर्भय हैं। कितना भी कोई कुछ भी करे लेकिन बाप की याद एक किला है। जैसे किले के अन्दर कोई नहीं आ सकता। ऐसे याद के किले के अन्दर रहो तो सेफ रहेंगे।

8) जैसे कोई के ऊपर किसी बड़े का हाथ होता है तो वह निर्भय और शक्ति रूप हो कोई भी मुश्किल कार्य करने को तैयार हो जाता है। आपका साथी तो स्वयं सर्वशक्तिमान बाप है। अगर कोई बहादुर का साथ होता है तो कितना निर्भय रहते हैं, यह तो सर्वशक्तिवान का साथ है तो कितना निर्भय रहना चाहिए।

9) साकार में अगर कोई निमित्त श्रेष्ठ आत्मा साथ में होती है तो उनसे कोई भी बात वेरीफाय कराए फिर करेंगे तो निश्चयबुद्धि होकर करेंगे। निर्भयता और निश्चय दोनों गुणों को सामने रख करेंगे। तो जहाँ सदा निश्चय और निर्भयता है वहाँ सदैव श्रेष्ठ संकल्प की विजय है। जो भी संकल्प करते हो, अगर सदा निराकार और साकार साथ वा सम्मुख है, तो वेरीफाय कराने के बाद निश्चय और निर्भयता से करो, इससे समय भी वेस्ट नहीं जायेगा।

10)- जैसे शुरू-शुरू में देह-अभिमान को मिटाने का पुरुषार्थ किया कि ''मैं चतुर्भूज हूँ''। इससे स्त्री-भान, कमजोरी, कायरता आदि सब निकल गई और आप निर्भय और शक्तिशाली बन गये। वैसे ही अन्तिम लक्ष्य स्मृति में रहे कि मैं अव्यक्त फरिश्ता हूँ। फरिश्ते पन का अभ्यास करने से स्वत: निर्भय बन जायेंगे।

11) शक्तियाँ अपने शक्ति स्वरुप, सदा शस्त्रधारी, सदा निर्भय, सर्व आसुरी संस्कारों का संहार करने वाली प्रकृति और मायाजीत बनने वाली होती हैं। शक्तियों के यादगार चित्र में मायाजीत की निशानी है–शस्त्र और लाइट का क्राउन, प्रकृति जीत की निशानी है-शेर की सवारी। यह पशु-पक्षी आदि प्रकृति की निशानी है। प्रकृति के तत्व भी शक्ति-स्वरुप को भयभीत नहीं कर सकते। प्रकृति पर भी सवारी अर्थात् अधिकार।

12) शक्तियों का विशेष गुण निर्भयता का गाया हुआ है।

निर्भय सिर्फ कोई मनुष्यात्मा से नहीं लेकिन माया के वार से भी निर्भय। जो माया से घबराने वाले नहीं–उसको शक्ति कहा जाता है। माया से जो डरता है वह हार खाता है। जो निर्भय होता है उससे माया खुद भयभीत होती है। तो जैसा नाम है शक्ति सेना–तो शक्तिपन की विशेषता–निर्भयता प्रैक्टिकल में दिखाई दे, तब कहेंगे शक्तियाँ। किसी भी प्रकार का भय है तो उसे शक्ति नहीं कहेंगे।

13) जो शस्त्रधारी होते हैं वह दुश्मन से सदा निर्भय होते हैं। जैसे पहरे वाला चौकीदार अगर शस्त्रधारी होता है और उसको निश्चय है कि मेरा शस्त्र दुश्मन को भगाने वाला है, हार खिलाने वाला है तो वह कितना निर्भय हो करके चलता है। तो यहाँ भी माया कितना भी सामना करे लेकिन शस्त्रधारी हैं तो माया से कभी घबरायेंगे नहीं, डरेंगे नहीं, हार नहीं खायेंगे अर्थात् सदा विजयी होंगे।

14) यह सर्वशक्तियाँ आपकी भुजायें समान हैं, आपकी भुजायें आपके आर्डर के बिना कुछ नहीं कर सकती हैं। आर्डर करो सहनशक्ति कार्य सफल करो तो देखो सफलता सदा हुई पड़ी है। आर्डर नहीं करते हो लेकिन आर्डर के बजाए डरते हो - कैसे सहन होगा, कैसे सामना कर सकेंगे! कर सकेंगे वा नहीं कर सकेंगे! इस प्रकार का डर वाला आर्डर नहीं कर सकता है। महाकाल के बच्चे भी अगर डरें तो और कौन निर्भय होंगे! हर बात में निर्भय बनो। अलबेले और आलस्यपन में निर्भय नहीं बनना - मायाजीत बनने में निर्भय बनो।

15) हिम्मते शक्तियां मदद दे सर्वशक्तिमान। शेरनियां कभी किससे डरती नहीं, निर्भय होती हैं। यह भी भय नहीं कि ना-मालूम क्या होगा! सत्यता के शक्ति स्वरूप होकर, नशे से बोलो, नशे से देखो। हम आलमाइटी गवर्मेन्ट के अनुचर हैं, इसी स्मृति से अयथार्थ को यथार्थ में लाना है। सत्य को प्रसिद्ध करना है न कि छिपाना है।

16) शक्तियों का मुख्य गुण है निर्भय। माया से भी डरने वाली नहीं। ऐसी निर्भय हो? माया चाहे शेर के रूप में आये अर्थात् विकराल रूप में आये लेकिन शक्तियाँ उस शेर पर भी सवारी करने वाली, इतनी निर्भय। जो निर्भय स्टेज पर रहते उनका साक्षात्कार शक्ति रूप का होता है। सदा शस्त्रधारी, दुनिया आपको इसी रूप में नमस्कार करने आयेगी।

शिवबाबा याद है ? 12-3-13 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

''अपमान की फीलिंग दबाना माना शान्ति गुम होना, दुःखी होना, इसलिए मान-अपमान की फीलिंग से परे रहो, बहुत मीठे बनो''

(दादी जानकी)

बाबा चाहता है मेरे बच्चे मीठे मीठे मधुर बनें। कोई कडुवा न बोले। अगर कोई कडुवा बोलता है तो मैं उसे याद करती हूँ, तो मैं मीठी कैसे बनूंगी। एक मक्खी बीमारियों को भगाने वाली है, दूसरी मक्खी बीमारी फैलाने वाली है। बीमारी फैलाने वाली दो मक्खियां इकट्ठी नहीं रह सकती। मधुमक्खी इकट्ठी संगठन में रहती हैं तभी तो मधु देती है। हम भी मधुबन में रहते हैं। तो मधु जैसा मीठा बनना है।

तो मुझ आत्मा को क्या करना है! यह क्या करता, वह क्या करता .... नहीं। वैरायटी ड्रामा है भिन्न-भिन्न सीन सामने आती हैं। ड्रामा में जो मुख्य एक्टर हैं वह दूसरे की एक्ट नहीं देखते हैं। भले पार्ट के लिए पति पत्नी बनेंगे, बहन भाई बनेंगे, लेकिन अन्दर रहता मैं तो एक्टर हूँ, अभिमान नहीं रख सकता। सबसे बड़ा दुख देने वाला है सूक्ष्म अपमान की महसूसता। मैजारिटी को अपमान की महसूसता होती है। कोई विरला होगा जो मान की इच्छा नहीं, अपमान की फीलिंग नहीं। एक है दबाना, दूसरा है समाना। थोड़ा भी अपमान हुआ उसे दबाया तो अन्दर से शान्ति गुम हो जायेगी। वही चिंतन चलता रहेगा। किसी से भी व्यवहार अच्छा नहीं होगा। अच्छे से भी अच्छा व्यवहार नहीं होगा। तो अपने को आवाज से परे जाना है ना। घर में जाना है ना। जब घर जाना कहती हूँ तो दीदी याद आती है।

दीदी का त्याग वन्डरफुल। तपस्या आंखों से देखी है, कभी कोई देहधारी के तरफ जरा भी लगाव झुकाव नहीं देखा। यह हमारे पूर्वज हैं। चन्द्रमणि दादी को याद करूं या शान्तामणि दादी को याद करूं। बाबा हर एक को प्यार से देखता था। शान्तामणि के लिए कहा यह बहुत सच्ची है, सचली कौड़ी है। मैंने कहा मुझे भी सच्चा बनना है। दीदी ने कहा बाबा से तुम हंसकर मिलो ना! हमें लगता था यह भगवान है ना, उसे बाबा भी कैसे कहूं। लेकिन अन्दर सच्चे पुरुषार्थी बाबा से सर्व संबंध का अनुभव करते हैं। पहले कहेंगे माँ है, फिर बाप, शिक्षक,

सतगुरू, सखा, साथी बन जाता है। टीचर साक्षी होकर प्ले करना सिखाता है। सतगुरू श्रीमत देता है। जो श्रीमत देता है उस पर चलने की भी शक्ति देता है। मनमत नहीं चलती। तो यह चेक करना जरूरी है। हम बाबा से मिलते मधुबन में बैठे हैं, परचिंतन परदर्शन से परे हैं! जो दोनों से पार रहते हैं, वह स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं।

एक बाबा के बच्चे हैं, बहन भाई हैं। कुछ मुख्य बातें हमारे जीवन में प्रैक्टिकल हों, बाबा मम्मा ने ध्यान खिंचवाया है बच्चे इस पढ़ाई की वैल्यु चाहिए। वैल्यु होगी तो पढ़ाई प्रैक्टिकल लाइफ में होगी। भगवान की पालना का कदर होगा। मुझे स्वयं भगवान ने अपना बनाया है, बचपन से लेकर आज तक उसकी पालना के नीचे रहे हैं। कभी अधीनता का संस्कार ही नहीं है। पालनहार इतनी पालना दे रहा है, भावना यह है, यह ईश्वर की पालना के अन्दर आ जावे। तो देही-अभिमानी स्थिति बनेगी। मेरा मकान है, मेरा यह है.. मेरा मेरा कुछ भी कोने में पड़ा होगा तो ईश्वर की पालना नहीं ले सकेगा। समझने वाली बाते हैं। यह बातें धारण करने के लिए बुद्धि चाहिए। सच्चा पुरुषार्थी क्या करता है? बुद्धि अच्छी रखता है। ज्ञान धारण करेंगे बुद्धि से तब योग लगेगा। योग से विकर्म विनाश होंगे। अगर मेरे विकर्म विनाश हुए हैं, तो बीमारी अगर आयेगी भी तो थोड़ी सी कोई दवाई ली ठीक हो जायेगी। अगर महसूसता होती मैं बीमार हूँ, तो यह भी कर्मभोग है।

जब कोई कहता है मुझे यह पता नहीं है, माना उसके पास एड्रेस नहीं है। अगर पता नहीं है तो जरूर धक्के खाता रहेगा। बुद्धि ठिकाने पर नहीं लगेगी। बाबा कहता है सिर्फ इसको पता बता दो। कहाँ जाना है! क्यों जाना है, क्या करने का है! कईयों की भाषा हो गई है बार बार कहेंगे पता नहीं, पता नहीं। आई डोंट नो। अरे बुद्धू है क्या! बाबा कहता था यह बुद्धू है, जो कहता आई डोंट नो। और कुछ बोलने आयेगा ही नहीं इसलिए बाबा कहता बच्चे बुद्धि को अच्छा बनाओ। जो बाप को भी जान सको, खुद को भी जान सको। जो जानते हैं उनको अच्छा पहचानने की इच्छा होती है। प्राप्ति पहचानने के बाद होती है। देखा या जाना लेकिन पाया क्या! बाप से मैंने क्या पाया है?

पहले गीत बना था हमने देखा, हमने पाया... बाबा ने कहा इसे करेक्शन करो। देखा नहीं जाना, हमने जाना, हमने पाया शिव भोला भगवान। है भोला परन्तु भोला कह करके अपना बनाकर हमको कहता, देखो मैं कौन हूँ। अच्छा। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"राइट इन्स्ट्रूमेन्ट वह है जिसको राइट समय पर राइट टचिंग आये, जो सिम्पल है सैम्पल है वही अच्छा इन्स्ट्रूमेन्ट है"

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति, कितना मीठा लगता है, कितना प्यारा लगता है। मेरा बाबा प्यारा बाबा कहें या मीठा परिवार, प्यारा परिवार कहें... फिर मैं कहाँ जाऊं, क्या करूँ? तो पहले मेरा बाबा, फिर मीठा बाबा फिर प्यारा बाबा और मीठा परिवार, प्यारा परिवार... एक एक इतना मीठा लगता है, तब तो मैं खैंच करके आ जाती हूँ।

राइट टाइम पर राइट टचिंग आवे, यह है इन्स्ट्रुमेन्ट का काम। इस इन्स्ट्रुमेन्ट को बनाने वाला कौन और चलाने वाला कौन? कमाल तो इस इन्स्ट्रुमेन्ट की है, कोई भी इन्स्ट्रुमेन्ट होगा बनाने वाला तो बना देगा, उसको यूज़ करना, चलाने वाला कोई साधारण नहीं चला सकता, यह इन्स्ट्रुमेन्ट ऐसा है। मैं इन्स्ट्रुमेन्ट हूँ, ऐसा लायक सबके आगे हाज़िर होने के लिए किसने बनाया? इन्स्ट्रुमेन्ट क्या बोले! मुझे चलाने वाला वो है ना। कैसे चल रही हूँ, बनाने वाला वो है ना। ऐसी फीलिंग जो है बड़ा न्यारा और प्यारा बना देती है। जैसे बाबा ने कहा एक एक शब्द दिल को लगता है। इन्स्ट्रुमेन्ट माना न्यारा और फिर बड़ा प्यारा लगता है।

इन्स्ट्रुमेन्ट माना सिम्पल और सैम्पल। पुराने जमाने की बात है, बड़े-बड़े बिजनेसमैन सैम्पल दिखा करके बिजनेस करते थे। एक सैम्पल दिखायेंगे और कहेंगे इतने दाम में मिलेगी, तो उनका वो बिजनेस बहुत अच्छा चलता है। तो वह बिजनेसमैन इतने अच्छे होते थे, कहीं और जगह न जा करके वहाँ ही जाते थे। जैसे हमारे ब्रह्माबाबा का कलकत्ते की मार्केट में बहुत अच्छा दुकान था, ऐसा अच्छा बिजनेस था, कोई भी ग्राहक बाबा को छोड़के दूसरी जगह नहीं जायेगा। तो जिस इन्स्ट्रुमेन्ट में सच्चाई और प्रेम है तो वह बेफिक्र हो शान्ति और रूहानियत

से, ठाठ से अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

इन्स्ट्रुमेन्ट माना सच्चा सेवाधारी। जो एकदम त्यागी, तपस्वी। कोई भी बात के त्याग की कमी है तो तपस्या नहीं होगी। याद, योग, तपस्या में अन्तर है। बाबा को याद करें तो अच्छा है। बाबा रोज़ मुरली में कहता है याद करो, याद करो। इसके लिए देहधारियों को याद नहीं करो, देह के सम्बन्ध से न्यारे बनो, मतलब याद के लिए पुरुषार्थ है। फिर योग इसमें बुद्धि बड़ी अच्छी हो जिसमें ऐसी ज्ञान की धारणा हो, क्योंकि ज्ञान सिर्फ सुनने और सुनाने के लिए नहीं है। सुनते धारणा हो, धारणा होने से ज्ञान सुनाने वाले से योग लग जाता है। याद करना नहीं पड़ता है, योग लग जाता है। योग से बल मिलता है फिर नेचुरल तपस्वी मूर्त बन जाते हैं, जैसे बाबा मम्मा।

देखना हो तो बाबा मम्मा को देखो, हमारे सभी पूर्वजों को देखेंगे तो सब त्यागी तपस्वी हैं। आज भी इन्हों के फोटो देखने और याद आने से एक रौनक आ जाती है। जैसे देखो, परदादी नाम लेते ही सारे इस्टर्न ज़ोन की सेवा याद आ जाती है। परदादी ने विश्व का भी चक्र लगाया है, जब वो विदेश में आई थी तब परदादी के सामने यह गीत बजा था – रचना जिसकी इतनी सुन्दर, वो रचता कैसा होगा...। तो हमारे जो पूर्वज हैं उनकी दुआ मेरे ऊपर बहुत है। हमारी दीदी खुद बोलती नहीं थी मेरे को कहती थी तुम यह बोलो, तुम यह बोलो...हर बार मुझे आगे बढ़ाती रही। जो बाबा ने बताया है वह स्पष्ट करो। दीदी ने ही सिखाया है - याद में भोजन करो, ट्रैफिक कन्ट्रोल ठीक से करो। उसका प्रमाण है कि अभी हम कभी अलबेले नहीं हो सकते हैं। अगर अभी भी कोई अलबेले हैं तो वो राइट इन्स्ट्रुमेन्ट नहीं हैं। दीदी को टाइम का कदर बहुत था। एक्यूरेट क्लास में आना, सुबह और शाम के योग में भी एक्यूरेट। तो निमित्त बनना हो तो एक्यूरेट की मिसाल बनो। तो अच्छा सैम्पल बनने से अच्छा बिजनेस हो जाता है माना औरों में उमंग-उत्साह पैदा होता है।

परिवर्तन हो तो ऐसा एक्यूरेट, कोई कमी न दिखाई पड़े, वो तभी होगा जब हमको किसी की कमी दिखाई नहीं पड़ेगी। मुख्य कमी यह है, जो मुझे किसी की कमी दिखाई पड़ी। बहुत-बहुत जरुरी है कमी नज़र न आवे। कमी देखी तो यह मेरा डिफेक्ट हो जायेगा, फलाना ऐसा करता है, देखना... क्या बोला? किसने बोला? अपना मुँह देख, मुखड़ा देख ले प्राणी दर्पण में... इसलिए कभी इधर उधर न देखो, मेरा बाबा इतना रहमदिल है, बाबा में इतना दया भाव और क्षमा भाव है, कैसी भी आत्मा होगी तो भी कहता था अच्छा बच्चे... ठीक हो जायेगा। बाबा कभी नहीं कहेगा यह क्यों किया? पास्ट इज़ पास्ट। बाबा से इतनी अच्छी-अच्छी बातें देखने सीखने को मिली हैं। मम्मा को भी मैने देखा है, मम्मा ऐसे करेक्शन नहीं देती थी, बाबा दे देता था, मम्मा नहीं देती थी। यह सब अनुभव इसलिए सुनाया जाता है, अनुभव करो ना। तो अच्छे अनुभव से जो हमारे में कमी है, खलास हो जाती है।

एक बारी बाबा ने मुझे कहा योग ठीक नहीं है, मैंने कहा अटेन्शन तो रखती हूँ फिर बाबा ने एक सेकेण्ड में ऐसे अशरीरी हो, 10-15 मिनट मुझे रियलाइज कराया और कहा यह अभ्यास नहीं है। वो दिन आज का दिन बीच-बीच में अभ्यास करती हूँ। अभी भी अव्यक्त बापदादा यही कहता है, ऐसी ड्रिल करो। अभी जो बाबा ने 5 मिनट की ड्रिल कराई, इतनी बड़ी सभा होते भी कितनी शान्त थी! बहुत अच्छा लगा, तो अन्दर ही अन्दर ऐसे इन्स्ट्रुमेन्ट बनना है। बनाने वाला बना रहा है, कराने वाला करा रहा है, वही करते रहो तो हर बात सहज है।

जिसकी जो सेवा है, जहाँ हैं निमित्त हैं, निमित्त भी निमित्त मात्र, हुआ ही पड़ा है क्योंकि ड्रामा की नॉलेज इतनी अच्छी है। इतनी सेवा की वृद्धि में आप सब निमित्त यहाँ बैठे हो, तो मैं क्या हूँ? कुछ नहीं। मैंने नहीं माखन खायो रे मैय्या... रीयली मैंने कुछ नहीं किया। वन्डर है बाबा का, सेकेण्ड में जो बात हुई, उसमें जो निमित्त बना, उससे किसी का भला हुआ तो बस, ठीक है ना! चिंतन नहीं है। तो निमित्त बनने में बहुत फायदा है, कोई भी निमित्त बनें, कोई कहे मैं क्या करूँ, मुझे समझ में नहीं आता है... अरे क्या बोलते हो? निमित्त भाव वाले का संस्कार और स्वभाव अपना चला गया। तो औरों का भी अगर कुछ होगा तो वह भी चला जायेगा। अगर मेरे में निमित्त भाव नहीं है तो कारोबार में भी बड़ी खिटपिट है, सम्बन्ध में खिटपिट है और जहाँ रूहानियत है, भावना अच्छी है, इसमें कल्याण भरा पड़ा है, पास्ट की बात कभी मिक्स नहीं करेंगे।

एक बारी मम्मा को मैंने पूछा कि मैं पुरुषार्थ में क्या ध्यान रखूँ? तो मम्मा ने कहा किसका अवगुण थोड़ा भी चित्त पर नहीं रखना। वो दिन आज का दिन। अगर कोई भी बात मेरे चित पर है तो मैं एकाग्रचित्त नहीं हो सकती। अन्तर्मुखता से एकाग्रता होती है। चित में माना मेमोरी के अन्दर कोई बात प्रिंट हुई पड़ी है तो वही बात बुद्धि में, मन में रहती है। तो एकाग्रता के लिए मन को शान्त करना पड़ता है, चित्त को साफ रखना पड़ता है। ऐसा डीप पुरुषार्थ करके एक मिसाल बनो तो बाबा बहुत प्यार करता है, दुआयें देता है, सकाश देता है। अच्छे बच्चे को प्यार करता है, दुआ करता है। आज्ञाकारी,

वफादार, ईमानदार बच्चा हूँ तो दुआयें देता है। यह जो हमको अच्छी पालना, पढ़ाई मिली है, अन्तिम जन्म है, अन्तिम घड़ियां हैं, अभी पुरुषार्थ करेंगे तो आदत पड़ जायेगी। अगर अभी ऐसा पुरुषार्थ नहीं करेंगे, अपने को मिया मिट्ठू कहलायेंगे, दिखावे वाला पुरुषार्थी बनेंगे तो बाबा का राइट इन्स्ट्रूमेंट नहीं बन सकेंगे। थोड़ा माइन्ड नहीं करना कई ऐसी आत्मायें हैं जो बुक लिखने वाले हैं, या कोई भी विशेषतायें, स्थूल कलायें हैं वो करते, दिखाते, कभी-न-कभी, कुछ-न-कुछ उन्हें अभिमान आ जाता है। पर बाबा जो मुरली चलाता है उस मुरली से कितना फायदा लिया है। एक एक मुरली हमारे जीवन को बदलने वाली है। बाबा के यज्ञ से हमें कितनी पालना मिल रही है, कितनी ऊंची पढ़ाई हमें मिल रही है। तो मैं निमित्त बनने वालों की तरफ इशारा करती हूँ। मेरी सबके प्रति यही भावना है। जैसे बाबा ने हमको कहा सुबह को उठना, मुरली पढ़ना, क्लास करना, भोग बनाना, खाना बनाके खिलाना..... तब लण्डन मधुबन का मॉडल बना है। बहुत करके जो भी सेन्टर खुले होंगे, गुरूवार का भोग लगाने से खुले हैं। ऐसा कोई सेन्टर है जो गुरुवार को भोग न लगाता हो? तो भोग बनाने वाला, भोग लगाने वाला सबके ऊपर बहुत जिम्मेवारी है। सब निमित्त बने हुए पर बहुत जिम्मेवारी है, लेकिन यह जिम्मेवारी सिरदर्द वाली नहीं है, स्नेह वाली, सच्चाई वाली, प्रेम वाली है। जो भी कुछ सेवा करता है उनकी रिजल्ट बहुत अच्छी है, जो आज यह सब देख रही हूँ। मुझे पता नहीं था मेरी इतनी एज़ होगी और मैं इतनी रिजल्ट देखेंगी। यह भी आप लोगों की दुआयें हैं, प्यार है जो मुझ आत्मा को इस जीवन में अच्छा जीना सिखाया है। मुझे गैरंटी है मैं पूरे 84 जन्म ही ब्रह्माबाबा के साथ होंगी। अन्तिम जन्म में भी साथ थी, बाबा अच्छा लगता था तो और जन्म में भी साथ ही रहेंगी क्योंकि ब्रह्माबाबा को फॉलो करना अच्छा लगता है, इजी है।

अभी देखो ब्रह्माबाबा ऐसा दिखाई देगा जैसे शिवबाबा इसमें बैठा है। अभी वो शिवबाबा को इतना खींचता है, उससे जब वो चला जाता है तब ब्रह्माबाबा सम्पूर्ण स्थिति में नज़र आता है। तभी मैंने गुल्जार दादी को कहा, वैसे हम बाबा बाबा करते हैं। जब बाबा आता है तो बापदादा बापदादा कहता है। बापदादा तो गुल्जार दादी के रथ में आता है, तो कहता है बापदादा आया है। वैसे गुल्जार दादी भी हमेशा बाबा बाबा कहेगी, पर यह इतनी सूक्ष्म पहचान जितनी निमित्त बने हुए को होगी, उतना दूसरों को करा सकेंगे।

निमित्त यानी एक सेकेण्ड में न्यारा, अगर न्यारा नहीं तो बाबा से वह प्यार खैंच नहीं सकता। नहीं खींचता है तो औरों को भी नहीं दे सकता है। तो न्यारा बनने से बाबा देखता है ये मेरे काम के लायक बच्चा है। टाइम पर बच्चा कहाँ भी हाज़िर होगा तो बाप वहाँ हाज़िर हो जायेगा, यह बाबा का वरदान है। हज़ूर सदा आपके सामने हाज़िर रहेगा।

अभी घर जाने की घड़ियां सामने खड़ी हैं और घर जाने की तैयारी वो करता है जिसने स्नेह में सम्पन्न बनने की गिफ्ट ले ली है। मेरी भावना है जैसे बाबा ने मुझे आप समान बनाने की गिफ्ट दी है, यह गिफ्ट ही लिफ्ट का काम करती है। लिफ्ट में बैठो ऊपर चले जाओ। सीढ़ी चढ़ने की मेहनत करने की जरुरत नहीं है, तो यह एक एक बाबा का जो महावाक्य है, उसको वरदान के रूप में जीवन में लाने वाला निमित्त ऐसा लायक बनता है, जो उनसे अनेक प्रकार की सेवायें चलते-चलते हो जाती हैं। वह यह नहीं समझते हैं सेवा है, नेचुरल है। तो ऐसे मिसाल बनो। स्ट्रांग बनो। अच्छा।

13-8-14

"अपने चेहरे को ऐसा दर्पण बनाओ जिससे हर एक को भगवान दिखाई दे"

(टीचर्स बहिनों के साथ-दादी गुल्जार)

आज का संगठन कितना प्यारा है। टीचर माना ही अपने फीचर्स द्वारा फ्यूचर दिखाने वाली। टीचर्स अपनी सूरत और कर्तव्य द्वारा प्रत्यक्ष करती हैं कि हमारा राज्य आया कि आया, जिसे दुनिया वाले चाहते हैं। आप और हमें देख लोग यही कहते हैं कि ये न्यारे और निराले हैं। टीचर्स हर एक समझती हैं कि बाबा मेरा है। जिससे प्यार होता है उसकी विशेषता जरुर धारण होती है। हम सभी ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के गुण, लक्षण और विशेषता धारण कर भविष्य का नक्शा तैयार कर रहे हैं। तो हम सभी बाबा के दर्पण हैं। बाबा क्या है? किसका है? यह हमारे चेहरे और चलन से दिखाई दे। लोग कहते हैं कि ब्रह्माकुमार और कुमारियों का चेहरा भगवान को दिखाता है। बाबा ने हमें ऐसा तैयार किया है कि हमें बाबा और

भविष्य ही दिखाई देता है। हमें अपने ईश्वरीय बचपन को देख वण्डर लगता है और हमें देख सभी को लगता है कि इनकी जीवन खुशमिज़ाज है। हम अमृतवेले से लेकर खुशी की खुराक खाते हैं। लोग तो तन्दरुस्त रहने के लिए घी खाते हैं और हम खुशी की खुराक खाते हैं। हम टीचर्स कितनी भाग्यशाली हैं। हाय-हाय के गीत भूल गये, वह स्वप्न में भी नहीं आता। हमारे दिल में वाह बाबा वाह! यही हमारा जीवन है। बाबा और सेवा में ही सारा दिन चला जाता है। जब से बाबा के बने, हमारी जीवन अलौकिक हो गई। हम सब बाबा के बच्चे स्वर्ग में जाने के लिए स्वयं को सजा रहे हैं। भविष्य में इस ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप खुशी होगी और अभी भी है और सदा रहेगी। हमारी जीवन ऐसी है जो कभी भी खुशी गायब नहीं होगी। कोई बात अगर आती भी है तो मन में यही रहता ड्रामा।

संगम पर हमारी कितनी महत्व वाली जीवन है। हमें देख दुनिया वाले कहते हैं वाह ब्रह्माकुमारी वाह! दुनिया वाले मैजारिटी समझते हैं कि ब्रह्माकुमारी जीवन कम नहीं, हम तो अनुभव करते हैं। तो हमारी जीवन सदा वाह वाह! रहे, कभी कभी नहीं। वाह हमारी जीवन वाह! वाह-वाह के गीत गाते रहते हैं। बाबा हमारे साथ हैं। मुख से बाबा बाबा निकलता है। वाह वाह! है, व्हाई तो नहीं निकलता? जैसी हमारी जीवन है, दुनिया में किसी की नहीं होगी। जैसा बाबा ने हमें बनाया है, ऐसा हमें सबको बनाना है, यही हमारी ड्युटी है। खुशी हरेक को देनी है चाहे किसी भी जात वा धर्म का हो। खुश रहना है और खुशी बाँटनी है। सभी खुश हैं, खुश रहेंगे, खुशी बाँटकर सबको खुश करेंगे, खुशी की दुनिया लायेंगे। खुशी की दुनिया नज़दीक है। अभी भी हमारे पास कौन-सा दु:ख है! सदा बाबा हमारे साथ है। कुछ भी होता है तो हम कहते - बाबा। बाबा भी कहते बच्ची क्या हुआ। बाबा हमें कमल का फूल बनाते हैं न्यारा और प्यारा। और फूल तो पानी में खराब भी हो जाते लेकिन कमल सदा ऊपर रहता है। हमारी जीवन भी ऐसी बन गई है। हम सहजयोगी हैं या मेहनत करते हैं? अगर कोई बात हो भी जाती है तो बाबा को दे दो, बाबा लेने वाला बैठा है। दिल से, प्यार से, बाबा कहते हो तो वह रक्षक तो होगा ना। बाबा के सिवाए कोई भी याद न आए। कोई बात आये बाबा को दे दो, वह ले लेगा, कभी ना नहीं करेगा। सदा हज़ूर हाज़िर है। कोई भी बात बाबा को याद करने से खत्म हो जाती है, सब अनुभवी हैं। मेरा बाबा कह मेरेपन का अनुभव करो। बाबा के ऊपर सबका हक है। बाबा के लिये सब पर्सनल है, कोई भी साधारण नहीं। जो अपने को साधारण समझते हैं उनका भी बाबा के दिल में बहुत मूल्य है। संगम पर बाबा ने हमें इतनी खुशी दी है जो सतयुग में भी नहीं होगी। ब्राह्मण माना सदा देवता पद याद रहे। अभी थोड़ा समय है युग बदलने में। जब हम सतयुग में मिलेंगे तो मौज ही मौज होगी, ऐसी लाइफ का बीज अभी बो रहे हैं। बात कैसी भी हो, हम सन्तुष्ट तो सब सन्तुष्ट हो जाते हैं। कितना भी नुकसान हो जाये, हमें ज्ञान से परिवर्तन कर दौड़ लगानी है। बाबा ने हमें इतने तरीके सुना दिये कि यह आये तो यह करना। कितने सहज रास्ते बता दिये। बाबा को बच्चों से प्यार है, समझते हैं कल ठीक हो ही जाना है। हमें भी निश्चय है कि वह ठीक कर देगा। अगर ठीक नहीं होता तो इतना समय यज्ञ में नहीं रहते। बातें तो आयेंगी लेकिन बातें इतनी ताकतवर न हों जो मेरी खुशी ले जायें। बातों को भगवान नहीं बनाना।

आज दिन तक भी भागवत में हमारे जीवन का गायन है, वो गा रहे हैं और हम चल रहे हैं। शान्ति भी दो प्रकार की होती है। एक है सोच की शान्ति, दूसरी है ज्ञान के स्थिति की। अन्दर से सभी जानते हैं कि मेरी स्थिति कैसी है! एक सेकेण्ड जो बीता वह बीता। बाबा से वायदा करो कि हम आप जैसा बनेंगे, जो खिलायेंगे, जहाँ बिठायेंगे, जैसा चलायेंगे वह करेंगे। पेपर आना माना स्वयं का पक्का होना है। दिल्ली वाले राज्य तैयार करने वाले हैं, हमारी ड्यूटी है सतयुग में सबको सेट करने की। हम सबको ऐसा योग्य बनायेंगे जो सतयुगी देवतायें तैयार हों। हमारी जीवन ऐसी है जो दु:ख-अशान्ति फील नहीं होती। रोज़ अमृतवेले बाबा की शाबास लो कि बाबा मैं कल भी ठीक रही और आज भी ठीक रहूँगी।

प्रश्न:- दादी जी, हमारे प्रति अपने दिल की आश बताईये?

उत्तर:- कोई भी प्रॉब्लम नहीं बनना, प्रॉब्लम मिटाने वाले बनो। टीचर्स निमित्त हैं सबको उड़ाने वाली, यही हमारी ड्यूटी है। आज से बाबा को यही रिजल्ट देंगे कि बाबा दिल्ली पास है। हमारे कहने का मान तो रखेंगे ना। बाबा मदद करता है, नाज़ुक को भी ठीक कर देता है। दिल से बाबा कहो, वह हमारे लिये बंधा हुआ है। बाबा को एक मास का रिकॉर्ड दिखाना है कि आप समान रहूँगी और विजयी बनूँगी। बाबा कहे दिल्ली वालों ने जो वायदा किया वो निभाया है! दिल्ली करेगा तो औरों में भी उमंग आयेगा। आप सभी हमारे दिल की साथी हो। बाबा अपने मुख से कहे कि दिल्ली पास। हमें औरों को भी आगे बढ़ाना है। सारे विश्व का कल्याण करना है। बातें तो आयेंगी हम लक्ष्य रखें कि हम पास होंगे। संकल्प में भी पास। आगे हमारी कोई कमजोरी की रिपोर्ट ना हो।

प्रश्न:- दादी जी, आप टीचर्स को किस स्वरूप में देखना चाहती हैं?

उत्तर:- सन्तुष्टमणि के रूप में। आप सब तो जानती हो कि सन्तुष्टता क्या होती है? आज से संकल्प करो मैं सन्तुष्टमणी हूँ, बाबा के गले का हार हूँ।

दीपावली के निमित्त विशेष दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

1) अभी दीपावली आ रही है... हम दिवाली पर सबको कहेंगे कि पास्ट का चौपड़ा समाप्त कर अब नया बनाना है। तो हरेक खुद को भी देखे कि हमारा पुराना चौपड़ा समाप्त हुआ है? हरेक अपने चौपड़े का चार्ट निकाले। जो जितनी-जितनी दिव्य धारणा करता, वह स्वयं अपना नाम ऊंचा करता। गुणगान उनका होता जो अपना रिकार्ड अच्छा बनाता, अपने गुणों की, सेवा की छाप, प्यार, प्रेम की छाप डालता। तो हरेक अपनी स्थिति का चार्ट देखे और अपने आपसे पूछे कि क्या हम सेवाओं में रहते, एकमत, एकरस, एक दो के स्नेही होकर रहते हैं? जो आज भी अगर यह शरीर छूटे तो पीछे सब उसका गुणगान करें? ऐसे तो नहीं मैं किसी के लिए बोझ हूँ? यह तो किसी के मुख से नहीं निकलेगा कि अच्छा हुआ, बोझ हल्का हुआ। तो अपनी स्थिति ऐसी लवली बनाओ जो हरेक के दिल से मेरी कलाओं का, गुणों का, सेवाओं का, विशेषताओं का वर्णन हो। हरेक गणुगान करे। हरेक के दिल से निकले फलानी आत्मा इतनी महान थी। जब हम वाह बाबा, वाह ड्रामा कहते.. तो हम बच्चों की भी सब वाह-वाह करें, ऐसा हरेक का चार्ट होना चाहिए।

2) बाबा ने हमें ड्रामा की भावी बता दी है, सब देख भी रहे हैं। सब दिन एक बराबर नहीं होते, आज क्या है, कल क्या होगा! बाबा ने इशारा दे दिया है - जो करना है सो आज करो। तो देखना है कि हम समय के पहले रुद्र बाबा पर पूरा-पूरा बलि चढ़ चुके हैं? हमने अपने पुराने संस्कारों की, स्वभावों की बलि चढ़ा दी है? मैं ऐसा कर्म कर रही हूँ जो दूसरा मुझसे प्रेरणा ले? अगर मेरी बुद्धि अनेक तरफ भटकेगी तो जरूर बाबा से बुद्धि आफ हो जायेगी। समझो किसी भी कारण से थोड़ी घड़ी के लिए मैं असन्तुष्ट हुई... तो उस समय हमारे संकल्प कैसे होंगे! क्या बाबा की याद रहेगी! कोई में जिद्द है, फालतू बोलने का संस्कार है.... तो मैं पूछती अगर कल शरीर छूट जाये तो क्या गति होगी! जब हम देख रहे हैं कि सबको उड़ना है तो क्यों न हम अपनी ऐसी श्रेष्ठ स्थिति बनायें।

3) हमारे स्वर्ग में सदा सूर्य उदय रहेगा, पूर्णिमा का चांद चमकता रहेगा... अंधकार आ नहीं सकता लेकिन वह तब होगा जब संगम पर हमारे हर स्थान पर 24 घण्टा योग का दीवा जलता रहे। योग की ज्योति ऐसी जगाओ जो आने वाला ऐसा अनुभव करे कि यहाँ योग का सूर्य चमक रहा है। सदा योगी जीवन की भासना रहे, योग के वायब्रेशन रहें। इसके लिए निमित्त बनने वालों में ज्ञान और योग का पूरा-पूरा इन्ट्रेस्ट चाहिए।

4) जितना-जितना हमारा व्यवहार, हमारा खान-पान हमारी अनासक्त वृत्ति, हमारा बोल-चाल योगयुक्त होगा उतना हमारी योगी लाइफ सबको आकर्षित करेगी। हम सब त्यागी और योगी बच्चे हैं, हमारी दिल सब बातों में तृप्त चाहिए। त्याग तपस्या का प्रैक्टिकल पाठ हमें पढ़ना है। हम बाबा के बहुत रॉयल बच्चे हैं। सदा लक्ष्य रहे जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख दूसरे करेंगे। तो हमारा हर कदम, हमारा हर संकल्प, बोल, खान-पान ऐसा हो जो हर घड़ी पदमों की कमाई जमा होती रहे। हमारी चलन ऐसी रॉयल होनी चाहिए जो सबको लगे कि सचमुच यह कोई रूलर है।

5) इस दीपावली पर हरेक अपने आप से संकल्प करो कि ''अब हम बाबा मीत के साथ आपस में एक दो के मीत बनकर प्यार का दीप जलाकर सदा रखेंगे।'' बीती को बिन्दी लगाए, सबकी विशेषतायें देखते हुए, निर्माण बन सबको सम्मान देते हुए संस्कारों की महारास कर स्नेह का सच्चा सबूत देंगे। अभी बाबा के मिलने के दिन समीप आ रहे हैं तो हरेक बाबा को अपनी यह रिजल्ट दे। एक दूसरे में सूक्ष्म मात्रा में भी मनमुटाव हो, तो उसे मिटाकर अपने को एक स्नेह के सूत्र में बांधो। हरेक आत्मा के अपने-अपने घर में यह दीप जगे तो सचमुच सृष्टि पर स्वर्ग आ जायेगा। जो करेगा सो पायेगा। तो अब ऐसा मीत बनो जो लगे कि सच्ची-सच्ची दीपावली मनाई।

6) अब तो बाबा को घर का गेट खोलना है, बाबा कहते भी हैं बच्चे, स्वर्ग तब स्थापन होगा जब विनाश होगा और विनाश तब होगा जब तुम बच्चे कर्मातीत बनेंगे। तो कर्मातीत बनने के लिए हरेक अपना-अपना चार्ट चेक करे। देखना यह है कि हम प्रैक्टिकल सभी बातों से परे-परे, उपराम रहते हैं! सबसे परे रहो तो वायमुण्डल पावरफुल बन जायेगा।

7) बाबा कहते बच्चे, तुम्हें अपने सर्व खजाने सफल करने हैं। ऐसा नहीं समझो कि हमने इतना दिया, इतना किया... यह संकल्प आना भी दोष है। बाबा हमारी कितनी पालना कर रहा है, उसका रिटर्न भी हमें देना है। जितना-जितना हम मंसा-वाचा-कर्मणा सर्विस पर रहेंगे उतना हमारी बुद्धि फ्रेश रहेगी, खुशी रहेगी। जितना बिजी उतना खुशी। फ्री टाइम इधर-उधर गंवाने के बदले योग में बैठो। अपनी घड़ियों को सफल करो। घड़ियां सफल होंगी - याद की यात्रा से।

8) बाबा ने हम बच्चों पर बहुत बड़ी जिम्मेवारी रखी है। हमें सारी दुनिया देख रही है। दुनिया से हम निराले हैं, दुनिया हम से निराली है... हमें शान्ति और प्रेम के एक सूत्र में बंधकर दुनिया को बांधना है, अपने वायब्रेशन दुनिया को देने हैं। यही सच्चे स्नेह का सबूत देकर सच्ची-सच्ची दीपावली मनानी है। अच्छा- ओम् शान्ति।